केसर भूमि कश्मीर में युगान्तर शासन व्यवस्थाः एक परिचय

डा.नरेश कुमार*

परिचय

जम्मू और कश्मीर का इतिहास पुरातन काल से आरम्भ होता हैं। केसरभूमि कश्मीर प्राचीन काल से लेकर आज तक सभी शासकों के आकर्षण का केंद्र रहा है। ऋषि कश्यप के नाम से स्थापित कश्मीर अपनी भौगोलिक विशेषताओं तथा राजनीतिक स्थिरता के कारण सदैव महत्वपूर्ण रहा है। कश्मीर के प्राचीन इतिहास और सौंदर्य का उल्लेख कल्हण रचित राजतरंगिणी में बहुत ही व्यापक एवं सुन्दर रूप में प्रतिपादन किया किया गया हैं। कश्मीर के इतिहास के लम्बे कालखंड में यहाँ मौर्य, कुषाण, हूण, करकोट, गोनंद, लोहरा, मुगल, अफगानी, सिख और डोगरा आदि राजवंशों के राजाओं का शासन रहा है। एशिया क्षेत्र में कश्मीर सदियों तक संस्कृति एवं दर्शन शास्त्र एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा। कश्मीर के इतिहास पर यदि नजर डाली जाए तों हिन्दू शासकों का राज लम्बे समय तक रहा, जिनमें मौर्य राजवंश, करकोट राजवंश, गोनंद राजवंश, उत्पल राजवंश, लोहरा राजवंश आदि वंश के राजा शामिल थे। कश्मीर में सम्राट अशोक, कुषाण वंश में कनिष्क जो अशोक की तरह सबसे शक्तिशाली राजा था और सभी बौद्ध थे ,कनिष्क का शासन मौर्य शासन के बाद स्थापित हुआ था। कालांतर मध्य काल में अफगानी राजा दुर्रानी, सिख राजा रणजीत सिंह, मुगल शासन और डोगरा वंश का शासन रहा था। कश्मीर में डोगरा वंश का अंतिम राजा हरी सिंह था, जिसने भारत में कश्मीर के विलय की सहमति दी।

भारत स्वतंत्र होने से पहले जम्मू और कश्मीर के पाँच क्षेत्र- जम्मू, कश्मीर, लद्धाख, गिलगित और बल्टिस्तान आदि थे। 1947 में भारत से अलग हुए पाकिस्तान ने कश्मीर पर हमला कर काफी बड़े क्षेत्र पर कब्जा कर लिया, जिसे पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) कहते हैं। यह भारतीय कश्मीर से तीन गुणे से भी ज्यादा बड़ा हैं, जिसका क्षेत्रफल लगभग 13 हजार वर्ग किलोमीटर से भी अधिक हैं। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में अक्साई चिन शामिल नहीं हैं। यह इलाका महाराज हरी सिंह के समय कश्मीर का हिस्सा था। 1962 में भारत और चीन के बीच युद्ध के बाद कश्मीर के उत्तर-पूर्व में चीन से सटे कश्मीरी इलाके अक्साई चिन पर कब्जा कर लिया और पाकिस्तान ने चीन के इस कब्जे को मान्यता दे दी। भारतीय जम्मू-कश्मीर और अक्साई चिन को अलग करने वाली रेखा को लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल (एल ए सी) यानी वास्तविक नियंत्रण रेखा कहा जाता है। 1947 के युद्ध के बाद पाकिस्तान द्वारा किए गए कब्जे वाले कश्मीर को उसने अपने प्रशासनिक लाभ के लिए दो भागों में बाँट दिया। पहला हिस्सा- 'आजाद जम्मू और कश्मीर' और दूसरा भाग 'गिलगित-बल्टिस्तान' कहते हैं। हालाँकि 1947 में जब पाकिस्तान भारत से अलग हुआ तब उस दौरान कश्मीर के महाराजा हरी सिंह थे। हरी सिंह दोनों में से किसी भी देश के साथ कश्मीर का विलय नहीं चाहते थेए लेकिन जब 22 अक्टूबर को पाकिस्तान की ओर से हथियारबंद कबालियों ने कश्मीर पर अचानक धावा बोला तब तत्कालीन महाराजा हरी सिंह ने एक समझौते के दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर जम्मू और कश्मीर को

*शहीद भगत सिंह (सायं) कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय